साहित्य चिंतन फैंटेसी 04/5/2020 (20)

संपूर्ण अंग्रेजी हिंदी शब्दकोष के अनुसार फैंटेसी के कल्पना, मानसिक उड़ान, कल्पना शक्ति, प्रेम, सनक, तरंग मौज, स्वप्नों के देश में रहना, आदि कई अर्थ है। (संपादक-डॉ. भोलानाथ तिवारी, अमरनाथ कपूर,पृ.-531)

मनोवैज्ञानिकों ने फैंटेसी को काल्पनिक चिंतन का ही एक रूप माना है। जो वस्तुजगत की परिस्थितियों से उतना निर्धारित नहीं होता जितना कि व्यक्ति की इच्छाओं, मूल वृत्तियों और भावों के द्वारा दमित इच्छाओं की काल्पनिक इच्छापूर्ति को फ्रायड ने स्वप्न या दिवास्वप्न का ही नहीं कला और साहित्य का भी मूल माना है।

कला और साहित्य की रचना-प्रक्रिया में फैंटेसी का क्या योगदान है? इस संबंध में मुक्तिबोध ने 'एक साहित्यिक की डायरी' शीर्षक रचना में अपने विचार व्यक्त किए हैं-"कला के प्रथम क्षण की तीव्र अनुभूति ही कला के दूसरे क्षण में विधायक कल्पना के द्वारा फैंटेसी में बदल जाती है और तीसरे क्षण अर्थात् शब्दबद्ध होने की लंबी प्रक्रिया में यह विकसित परिवर्तित होती हुई अंत में नवीन रूप में अवतरित होती है। फैंटेसी में कवि का व्यक्तित्व और उसकी इच्छाएँ जिस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है उसे स्पष्ट करने के लिए मुक्तिबोध की कविता का उदाहरण द्रष्टव्य है-

प्रेम कर लिया हो
जीवन भर के लिए
कमरे में सुबह की धूप आ गई है
और वह सोचता है-
क्या कोई प्रेमिका सचमुच मिलेगी?
हाय यह वेदना स्नेह की गहरी
जाग गयी क्योंकर? -चाँद का मुँह टेढ़ा है, पृ.-228

यह प्रेमिका हाड़ मांस की बनी कोई स्थूल प्रेमिका नहीं है। यह तो क्रांति की देवी है जिसके लिए मुक्तिबोध जीवन भर तरसते रहे, जिस के लिए उनमें 'स्नेह की गहरी वेदना' थी। संपूर्ण व्यक्तित्व और 'आत्मा की चमकीली प्यास'

4/05/2010

से क्रांति को चाहने वाला कवि स्वप्न में ही उसे पा सकता था। इसमें युग की आकांक्षा को फैंटेसी के रूप में रचनात्मक धरातल पर प्रतिफलित किया गया है। इसमें गहरी अर्थवत्ता एवं उद्देश्य छिपा है। जार्ज थानसन ने भी कला की फैंटेसी को इच्छित यथार्थ की पूर्ति कहा है–यह एक जादू है-एक भ्रांति है जो कि यथार्थ के ही ढंग की है लेकिन यह भ्रांति भी बेकार नहीं है। वह यथार्थ के प्रति मनुष्य के रवैये को बदलता है और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से यथार्थ को भी बदलता है। (जार्ज थामस्न, मार्क्सिज्म एंड पोएट्री, पृ.8)

मुक्तिबोध के अनुसार कविता की फैंटेसी का ढाँचा तो अपना होता है किंतु वह जीवन तथ्यों के रंग से अनुस्यूत होता है। उन्होंने प्रसाद जी की निम्नांकित पंक्तियों को उद्घृत किया है–

तुम हो कौन और मैं क्या हूँ
इसमें क्या है धरा सुनो,
मानस जलधि रहे चिर-चुम्बित,
मेरे क्षितिज उदार बनो।

इस फैंटेसी का ढाँचा अध्यात्मवादी रहस्यवादी है, किंतु इसके मूल में प्रणय चित्रों को कल्पित किया गया है।

कविता में फैंटेसी के उपयोग की कलात्मक सार्थकता क्या है? मुक्तिबोध के अनुसार कविता के अंतर्गत फैंटेसी के उपयोग की सबसे बड़ी सुविधा यह है कि लेखक वास्तविकता के प्रदीर्घ चित्रण से बच जाता है। वह संक्षेप में ज्ञानगर्भ फैंटेसी द्वारा सार रूप में जीवन की पुनर्रचना करता है। (मुक्तिबोध, कामायनी: एक पुनर्विचार, पृ.-7)

कविता में यथार्थ के तनाव, विसंगति, आत्म पक्ष और वस्तुपक्ष सबको एक साथ समेटने के लिए यह जरूरी है कि कवि फैंटेसी का सहारा ले। मुक्तिबोध की उक्त कठिनाई ने ही उन्हें फैंटेसी का सहारा लेने के लिए विवश किया और यही कारण है कि उनकी कविताओं में अनेक स्वप्न, अनेक विचार धाराएँ, अनेक कथ्य एक दूसरे से घुलमिल जाते हैं–

स्वप्न के भीतर एक स्वप्न
विचारधारा के भीतर और
एक अन्य
सघन विचारधारा प्रच्छन्न

4/05/2020

कथ्य के भीतर एक अनुरोधी
विरुद्ध विपरीत,
नेपथ्य संगीत।। –मुक्तिबोध : कामायनी एक पुनर्विचार, पृ.-3

मुक्तिबोध के अनुसार फैंटेसी एक झीना परदा है जिसमें से जीवन तथ्य झाँक झाँक उठते हैं। फैंटेसी का ताना-बाना कल्पना बिंबों में होने वाली विविध क्रियाओं से बना हुआ होता है। स्वप्न कथन शैली के कारण कविता में देश और काल की दृष्टि से नितांत असंबद्ध एवं दूर की वस्तुओं और विचित्र एवं असंभव घटनाओं को एक साथ रखा जा सकता है और औचित्य पर कोई उंगली भी नहीं उठा सकता। इस फैंटेसी शिल्प के माध्यम से कवि कविता में अनेक चमत्कारों की सृष्टि कर सकता है। शर्त यह है कि उन चमत्कारों का वास्तविकता से कहीं न कहीं जुड़ाव हो।

परंतु आज बच्चों के लिए बालीवुड ऐसी फिल्में बना रहा है, जो वास्तविकता से कोसों दूर है अर्थात जिनमें कोरे चमत्कार है। बदकिस्मती से बच्चों की फैंटेसी या स्वप्नलोक में जीने की आदत को बाजार अपने फायदे के लिए भुना रहा है। कुछ साल पहले जब 'शक्तिमान' को पहले इंडियन सुपरहीरो की तरह पेश किया गया था तो बहुत से बच्चों ने खुद को इसलिए जानलेवा परेशानियों में डाल लिया था ताकि शक्तिमान उन्हें बचाने आएगा। हालात की गंभीरता को देखते हुए शक्तिमान का किरदार अदा कर रहे मुकेश खन्ना को सार्वजनिक तौर पर यह बयान देना पड़ा कि शक्तिमान के सारे कारनामें सिर्फ फैंटेसी है। उनका वास्तविकता से कोई नाता नहीं है, तब जाकर स्थिति सुधरी और धीरे-धीरे शक्तिमान का जुनून बच्चों पर से उतरा। दरअसल मनोवैज्ञानिकों की मानें तो 11-12 साल के बच्चे फैंटेसी में जीते हैं। टेलीविजन पर दिखायी देने वाले पोकेमान और वेबलेड में उन्हें जिंदगी की सच्चाई दिखाई देती है। सच क्या है? सब तकनीक का खेल है-जैसी बातें उनकी समझ में नहीं आती है।